चरखा-संघका पुनर्जन्म

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १२ सम्पादक — किशोरलाल मशरूवाला अंक ८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाजी देसाजी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २५ अप्रैल, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

ओछी प्रान्तीयता

[यह बहुत ज़रूरी था कि हमारे नेताओंका ध्यान अिस बातपर खिंचे कि जाति-जाति और धर्म-धर्मके बीच तंगदिलीका होना जितना बुरा है, अुतनी ही प्रान्तीय तंगदिली भी बुरी है; और अिसके बारेमें वे अपनी आवाज़ अुठावें ।

सन् १९३३से देशमें बढ़ते हुअे प्रान्तवादपर मेरा ध्यान रहा है। और गांधी सेवा-संघका काम करते हुअे मुझे अुसकी बुराअियोंका दर्शन होता रहा। मार्च १९३८ में डेलांग (अुड़ीसा)में गांधी सेवा-संघका जो सम्मेलन हुआ था, अुसमें अध्यक्षके नाते अिस विषयपर मैंने अपने विचार विस्तारसे प्रकट किये थे। पूज्य गांधीजीने भी अुसपर जोर दिया था। फिर अिसपर सम्मेलनमें चर्चा हुअी, जिसमें श्री राजेन्द्रबाबू आदिने भी अपने विचार जाहिर किये थे। सम्मेलनमें नीचे दिया हुआ ठहराव भी पास हुआ था:

प्रस्ताव: "यह सम्मेलन खेदके साथ यह महसूस करता है कि देशमें प्रान्तीय संकीर्णताका जहर फैल रहा है। अिस सम्मेलनका यह मत है कि प्रान्तीय प्रश्नोंके बारेमें संघके सदस्योंका वही कर्तव्य है, जो जातीय प्रश्नोंके बारेमें। अर्थात् भिन्न भिन्न प्रान्त और भाषाके लोगोंमें मित्रभाव बढ़ानेके विषयमें सम्मेलनकी यह राय है कि सारा हिन्दुस्तान अेक ही देश है। हिन्दुस्तानका कोअी भी आदमी जिस प्रान्तमें रहे, अुस प्रान्तका नागरिक होनेके अुसे सब अधिकार प्राप्त हैं। वह या अुसके पुरखे अन्य प्रान्तसे आये हैं, अिस या दूसरे अैसे कारणोंसे अुसे दूसरे प्रान्तका समझकर नागरिकताके अधिकारसे वंचित नहीं करना चाहिये। न अुसके प्रति कोअी भेदभाव रखना चाहिये।

"साथ ही जो दूसरे प्रान्तमें बस गये हैं, अुनका यह कर्तव्य है कि अुस प्रान्तके जीवनसे समरस हो जायँ, अर्थात् अुस प्रान्तके सुख-दुःख और हित-अहितमें वैसा ही योग दें, जैसा कि अुस प्रान्तके लोग।"

सम्मेलनकी रिपोर्टपरसे अुस वक्तकी चर्चाके कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं।

वर्धा, ५–४–'४८ — कि० मशरूवाला]

"गांधीजी:— किशोरलाल भाअी जो अेक चीज आपके सामने पढ़ेंगे, अुसके विषयमें मैं कहना चाहता हूँ। अुनका व्याख्यान मैं पढ़ गया हूँ। ... मेरे दिलपर जो चीज असर कर गअी, अुसीको आपके सामने रखूँगा। . . .

"... यदि हम सत्य और अहिंसाका पालन केवल सरकारके साथ लड़नेमें करें और अपने प्रान्त-प्रान्तके या खानगी व्यवहारमें न करें, तो क्या लाभ है?

"... हमें प्रान्तवादको भी मिटाना चाहिये। यदि आन्ध्रवाले कहें कि आन्ध्र आन्ध्रके लिअे है, अुत्कल निवासी कहें कि अुत्कल अुत्कलवालोंके लिअे है, तो अिस तरह काफी प्रान्तीयता आ जाती है। सच तो यह है कि आन्ध्र और अुत्कल दोनोंको देश और जगतके लिअे कुर्बान होनेको तैयार रहना है। और हिन्दुस्तानको जगतकी वेदीपर अपना यज्ञ करना है। यही अिसकी सच्ची परीक्षा है। यह कोअी मेरी नअी भाषा नहीं है। लेकिन प्रसंगवश स्मरण दिला दिया है। . . ."

अध्यक्षके भाषणका हिस्सा:

"... कौमी झगड़ोंके जहरका हमें अनुभव हो चुका है; और होता भी जा रहा है। अब अुसकी जोड़में प्रान्तीय विद्वेषके जहरको भी मैं फैलता हुआ देख रहा हूँ। कांग्रेसने भाषावार प्रान्त-रचनाका सिद्धान्त स्वीकार किया है। और अपने संगठनके लिअे भाषावार प्रान्त ही बनाये हैं। लेकिन अिसमें कुछ अैसे प्रदेश भी हैं, जो अिस बँटवारेमें ठीक नहीं बैठते। अुदाहरणके लिअे, मराठी भाषा बोलनेवालोंके तीन और हिन्दी भाषियोंके चार प्रान्त हैं। फिर भी कुछ मराठी भाषी हिस्सा कर्नाटकमें शामिल है। भाषाके अनुसार प्रान्तोंकी पुनर्रचना द्वारा अेक भाषा बोलनेवाले लोगोंको अेक ही शासनमें ले आना अेक बात है और हरअेक भाषावार प्रान्तको अेक स्वतंत्र शासनक्षेत्र बना देना दूसरी बात है। आजकल यह माँग बड़े जोरोंसे पेश की जा रही है कि प्रत्येक भाषावार प्रान्तका शासन स्वतंत्र होना चाहिये। दूसरी तरफ अगर कोअी यह सुझाव रखे कि नागपुर, बरार और महाराष्ट्र सबको मिलाकर अेक बड़ा जिलाका बना दिया जाय, क्योंकि तीनोंकी भाषा अेक — मराठी — ही है, तो सम्भव है कि अिन तीनोंमेंसे अेक भी प्रान्तके नेता अिसे पसन्द नहीं करेंगे। मतलब यह कि अेक तरफ अेक भाषा भाषी होने पर भी अिन तीनों प्रान्तोंके लोग अलग अलग प्रान्तीय अभिमानको पोषण दे रहे हैं और दूसरी तरफ कर्नाटक, आन्ध्र आदिके नेता यह पुकार अुठाकर कि प्रान्तोंका भाषावार संगठन हो अपने प्रान्तोंका स्वतंत्र शासन निर्माण करना चाहते हैं।

"अभी तक तो कौमी तंगदिली और द्वेषकी बुराअी और अुसकी समस्या ही हमारे सामने थी। अब यह प्रान्तीय संकीर्णता और द्वेष अेक नअी चीज पैदा हो रही है। बम्बअीमें गुजराती, महाराष्ट्रीय, कर्नाटकी, ब्राह्मण, ब्राह्मणेतर, लिंगायत, हरिजन, मुसलमान आदि प्रान्तीय और कौमी दोनों प्रकारके भेदभाव बुरी तरह अुत्पन्न किये जा रहे हैं। मैंने तो यहाँ तक सुना है कि किसी छोटीसी भी समितिकी नियुक्ति करनी हो, तो अुसमें भी प्रतिनिधियोंकी निगाह अिसी बातपर रहा करती है कि हरअेक प्रान्त या कौमके लोगोंको ठीक हिस्सा मिला है या नहीं। और, अिसीके कारण छोटी छोटी बातोंमें झगड़े पैदा हो जाते हैं। शायद मद्रासमें भी यही हालत है।

"आज तक भेदोंको कायम रखनेके समर्थनमें हिन्दू और मुसलमान सभ्यताकी भिन्नता, रक्षा और अुत्कर्षपर जोर दिया जाता था। अब गुजराती सभ्यता, तेलगू सभ्यता आदिकी भिन्नता, रक्षा और अुत्कर्षकी बहसें छिड़ने लगी हैं।

"मैं स्वीकार करता हूँ कि भिन्न भिन्न महत्त्वकी भाषाओंकी अुचित समृद्धि होनी चाहिये। लेकिन अुसके लिअे तो बिना प्रान्तीय अीर्ष्या बढ़ाये और बगैर अेक दूसरेसे अेक प्रकारसे अलग हुअे भी काफी

गुंजाअिश है । आज तो ये प्रवृत्तियाँ जिस तरह जोर पकड़ रही हैं, अुसमें मुझे देशकी कोअी भलाअी नहीं दिखाअी देती । हर प्रान्तमें अपनी कोअी न कोअी विशेषता जरूर होती है । लेकिन हर-अेक विशेषता अैसी नहीं होती, जिसे कायम रखना जरूरी ही हो । यों तो अेक भाषा बोलनेवालोंके बीच भी थोड़ा बहुत भेद होता है । जब हम भेददर्शी बनकर देखने लगते हैं, तब तो काठियावाड़ी, गुजराती और गुजराती गुजराती भी भिन्न मालूम होती है । बिहारमें मागधी, भोजपुरी, मैथिली, वज्जिका आदि अलग अलग बोलियाँ हैं । मारवाड़में भी काफी भिन्न भिन्न बोलियाँ हैं । अिन बोलियोंमें कुछ पुराना लोकसाहित्य भी जरूर मिल सकता है । और यदि लेखकोंमें अिस भेदको स्थायी बनानेका भाव पैदा किया जाय, तो दस सालमें काफी साहित्य निर्माण किया जा सकता है । अिस प्रकारका कुछ काम शुरू भी हो गया है । यह अेक विचारणीय प्रश्न है कि अैसे भेदोंको किस हद तक पोषण देना अुचित होगा । हाथ, पैर, पेट, दिमाग आदि प्रत्येक अवयवमें अपनी अपनी विशेषता है । भोजनको भर लेनेकी शक्ति पेटमें है । पेटकी अिस शक्तिका पोषण वहीं तक अुचित होगा, जहाँ तक वह अुसे हजम करके हाथ, पैर, दिमाग आदिको सहायता दे । पर यदि वह अिस शक्तिको गवाँ ही न बैठे, बल्कि खुराक ले-लेकर अन्य अंगोंको अुलटा सुस्त बनाने लगे, तब तो अुस विशेषतापर नियंत्रण करना ही अुचित होगा । अिसी प्रकार किसी प्रान्तकी विशेषता तभी अिष्ट, सराहनीय और पोषण करने लायक होगी, जब कि वह सारे देशके अुत्कर्षमें सहायक ही और सबको अेक दूसरेके नजदीक लानेमें मददगार हो । अिसके विपरीत, यदि ये विशेषताअें प्रान्त-प्रान्त और भाषा-भाषाके बीच अीर्ष्या और मनमुटाव बढ़ाकर अेक दूसरेको निर्बल और छिन्नभिन्न करने लगें, तब तो अिनको रोकना ही अच्छा है । संघके सदस्य खुद ही सोचें कि अैसे समय हमारा क्या कर्तव्य हो जाता है ?

"मैं तो अिस विषयमें स्पष्ट हूँ । मेरी दृष्टिसे तो प्रान्तीय संघर्षोंके बारेमें हमारे लिअे वही नियम हो सकता है, जो हमने जातीय संघर्षके सम्बन्धमें बनाया है; यानी हमारे सदस्योंका यह कर्तव्य होगा कि वे अलग अलग समाजोंके लोगोंमें मित्रभाव बढ़ाते रहें । देशमें प्रान्तीय, कौमी और भाषा सम्बन्धी भेदभावोंको हम कभी अिस तरह पोषण न दें, जिससे अलग अलग प्रान्तोंकी जनतामें अीर्ष्या या वैर बढ़े । . . .

". . . मैं तो समझता हूँ कि मेरी मातृभाषा गुजराती होते हुअे भी मैं अपनेको महाराष्ट्रीय, विदर्भी, हिन्दुस्तानी कह सकता हूँ । यह भी कह सकता हूँ कि जिन प्रान्तोंकी सेवा करनेके लिअे मुझे अपना गुजरातीपन मिटानेकी जरूरत नहीं है । मेरा दिल अितना छोटा क्यों हो कि या तो मुझे सिर्फ गुजरातका ही अभिमान हो, या अपने गुजरातीपनको मिटाकर ही मैं दूसरे प्रान्तोंका अभिमान कर सकूँ ? अिसी प्रकार मैं अितने छोटे दिलका क्यों बनूँ और कहूँ कि जो गुजराती नहीं बोल सकता, अुसे मैं गुजराती नहीं कहूँगा ? अुदाहरणके लिअे, यदि मावळंकर चाहें कि लोग अुन्हें गुजराती समझें, तो वे पहले मराठी भाषा छोड़ दें । मुझे गुजरातके अेक कविकी बताअी गुजरातीकी व्याख्या ठीक मालूम होती है । वे कहते हैं — "जिसकी मातृभाषा गुजराती है, चाहे वह कहीं बसता हो; जो गुजरातमें आकर बस गया है, फिर अुसकी मातृभाषा कोअी भी क्यों न हो; और जो गुजरातका सेवक और हितचिंतक है, फिर अुसका देश और भाषा चाहे जो हो — ये सब गुजराती ही हैं । हमारी भिन्न भिन्न भाषाअें और लिपियाँ हमारे व्यवहारोंकी सहूलियतके लिअे हैं, अिसलिअे नहीं कि वे भूत बनकर हम पर सवार हो जायँ । अगर जरूरत पड़े, तो अुन्हें हम बदल भी सकते हैं । पचीस बरस पहले हमारे देशमें हरअेक प्रान्त तो क्या जिलेकी भी पगड़ियाँ तथा कपड़े अलग अलग होते थे । धोती और साड़ी पहननेका ढंग भी अलग अलग था । आदमीको देखते ही हम पहचान सकते थे कि वह कहाँका निवासी है । आज तो सारे देशमें गांधी-टोपीवाले या नंगे सिरवाले हो गये हैं । सबकी पोशाक अेक-सी होती जा रही है । अब केवल पोशाकसे हम शायद ही किसीका जिला या प्रान्त बता सकें । अगले पचीस सालमें तो और भी काफी परिवर्तन हो जायगा । क्या अिससे हमारी सभ्यता या प्रान्तीय विशेषताअें बिगड़ती जा रही हैं ? अिसी प्रकार भाषाअें भी भावोंकी अलग अलग पोशाकें हैं । और लिपियाँ अुनको प्रकट करनेकी जुदी जुदी फैशनें । क्या ये पगड़ियोंसे भी ज्यादा महत्व देने योग्य हैं ? पर अब अिस विषयको मैं यहीं छोड़ देता हूँ । आप अिसपर विचार करें ।"

× × ×

श्री राजेन्द्रबाबू बिहारी-बंगाली चर्चाका स्वरूप समझाने और अिस सम्बन्धमें की आनेवाली कुछ दलीलोंका जिक्र करनेके बाद बोले :

"अिस तरहकी शाब्दिक दलीलें बेकार हैं । असली सवाल यह है कि हमें अिस सम्बन्धमें क्या भाव रखना चाहिये । जो परप्रान्तीय हैं, बाहरसे आये हैं, अुनको चाहिये कि वे अुस प्रान्तके निवासियोंमें अिस तरह घुलमिल जायँ कि अुनका कोअी स्वतंत्र स्वार्थ ही न रहे । और अुस प्रान्तके लोगोंका भी यह कर्तव्य है कि वे अुन्हें गैर न समझें । अफसोस यही है कि अक्सर जितने झगड़े होते हैं, अुनका कारण यह है कि वे दोनों अेक दूसरेसे दूर दूर रहते हैं और अुनका आपसमें कोअी सम्पर्क नहीं होता । हमें अिस भेदभावको मिटानेका प्रयत्न करना चाहिये । आप अिस प्रस्तावको मंजूर कर लें ।"

टिप्पणियाँ

सूतकी शर्त

अखिल भारत चरखा-संघने खादीकी खरीदीपर सूतकी जो शर्त लगाअी थी, वह अुठा ली गअी है । कांग्रेसजनोंको चरखा चलाये बिना प्रमाणित खादी-भण्डारोंसे खादी खरीदनेमें अब बाहरसे लादी हुअी कोअी पाबन्दी नहीं रहेगी । यह बिलकुल अलग बात है कि ज्यादातर कांग्रेसजनोंको चरखा चलाये बिना या अपनी आँखोंके सामने सूत कतवाये बिना शुद्ध खादी पाना नामुमकिन हो जायगा । यह चीज कांग्रेसके तजवीजशुदा विधानसे निकलती है, जिसमें यह बताया गया है कि प्राथमिक कांग्रेस पंचायतोंके लिअे हर ५०० आदमियोंके पीछे अेक अुम्मीदवार रहेगा । अिसपर अगर पूरी तरह अमल किया जाय, तो किसी जगह चुनाव न लड़ने और पाकिस्तानको छोड़ देनेपर भी ३० करोड़की आबादीके लिअे कमसे कम ६ लाख अुम्मीदवारोंकी जरूरत होगी । अेक अुम्मीदवारके लिअे कमसे कम २५ गज खादी भी लगायें, तो सिर्फ कार्यकर्ताओंके लिअे ही १ करोड़ ५० लाख गजसे कम खादी नहीं चाहिये । यह अैसी माँग है जो आजकी हालतोंमें तब तक जल्दी पूरी नहीं की जा सकती, जब तक काफी अुम्मीदवार स्वावलम्बनको अमलमें न लायें ।

मुझे पूरी अुम्मीद है कि कांग्रेस सिर्फ प्रमाणित खादी भण्डारोंसे ही सारी खादी खरीदनेका आग्रह रखेगी । अखिल भारत चरखा-संघने यह तय कर लिया है कि वह अब खादीके व्यापारमें अपनी ताकत खर्च नहीं करेगा, यानी वह मजदूरीके लिअे ही कातनेवालोंसे खादी तैयार नहीं करायेगा । अिसलिअे वह खरीदारोंको सिर्फ अिस बातका विश्वास दिलानेके लिअे ही खादी भण्डारोंको प्रमाण-पत्र देगा कि जहाँ तक अुसे भरोसा है प्रमाणित भण्डार शुद्ध खादी ही बेचते हैं और मजदूरोंका शोषण नहीं करते । अैसी शर्तें लगानेकी जरूरत कांग्रेसके प्रस्तावित मकसदसे पैदा होती है ।

वर्धा, ८-४-'४८

'हरिजन' संस्करण

मैं चाहता हूँ कि 'हरिजन'के पाठक और साथ ही हिन्दुस्तानी भाषाओंमें अुसका अनुवाद प्रकाशित करनेवाले लोग जहाँ तक सम्भव हो

अंग्रेजी संस्करणके साथ गुजराती और हिन्दुस्तानी संस्करण भी देखें। अुनमें हरअेकमें अक्सर कोअी न कोअी अैसा स्वतंत्र लेख छपेगा, जिसका दूसरे किसीमें अनुवाद नहीं होगा। अुन्हें यह देखकर ताज्जुब होगा कि अेक ही विषयके लेख अंग्रेजीमें अलग ढंगसे लिखे जाते हैं और हिन्दुस्तानी भाषाओंमें अलग ढंगसे। अिसलिअे जब कभी हिन्दुस्तानी भाषाओंका लेख अंग्रेजीके लेखका अनुवाद न मालूम हो, तब अनुवादोंका प्रकाशन करनेवालोंके लिअे यह अच्छा होगा कि वे हिन्दुस्तानी या गुजरातीसे ही अुसका अनुवाद करें।

वर्धा, १३–४–'४८

(अंग्रेजीसे)

महिलाश्रम, वर्धा

स्व० श्री जमनालालजी बजाजके अुत्साह और मेहनतसे नारी-जातिकी सेवाके लिअे महिलाश्रमकी स्थापना हुअी थी। सारे देशसे बहनें अुसमें प्रवेश पाती थीं। जिस तरहका काम करनेकी अुसकी कोशिश थी, वैसा बहुत सा काम अब श्रीमती कस्तूरबा गांधी-स्मारक-निधिके द्वारा किया जा रहा है। अिस बातका और अपने आर्थिक साधनोंकी सीमाका खयाल करके महिलाश्रमने आअिन्दा विनयमंदिर-विभागको छोड़कर दूसरे सब विभाग बन्द करनेका निश्चय किया है। सिर्फ विनय-मंदिरका ५ वर्षका पाठ्यक्रम रहेगा। और अुसमें नअी तालीमके सिद्धान्तोंके मुताबिक सारी पढ़ाअी करनेके अुद्देश्यसे अिस पाठ्यक्रममें जल्दीसे जल्दी जरूरी फेरफार किये जा रहे हैं। श्री विनोबाने अिसमें समय-समय पर सलाह देना स्वीकार किया है। ११ से १५ तक की अुमरवाली छात्रायें, जो चार प्राथमिक कक्षाओंकी पढ़ाअी कर चुकी हैं, अिसमें दाखिल हो सकती हैं। नया वर्ष जूनसे शुरू होगा। ज्यादा जानकारी आचार्य, महिलाश्रम, वर्धासे मालूम की जाय।

वर्धा, ७–४–'४८ **कि० मशरूवाला**

राजघाटपर श्री विनोबाका भाषण

(३)

[दिल्लीकी साप्ताहिक प्रार्थनामें शुक्रवार ता० ९–४–'४८ की शामको ६॥ बजे। —सं०]

शामका समय बहुत पवित्र है, जब कि सूर्यनारायण अस्त हो जाते हैं, और हमारे जीवनका अेक हिस्सा समाप्त हो जाता है। अैसे समय चिन्तन करना, भगवानका नाम लेना, सब मिलकर अुपासना करना अच्छा लगता है। जो भाअी यहाँ आये हैं, अुनसे मैं प्रार्थना करूँगा कि वे अिस अुपासनामें नियमित आया करें और अपने साथ मित्रोंको भी लाया करें। क्योंकि यह अैसा मीठा भोजन है, जिसमें अगर हम शरीक होते हैं तो हमें दूसरोंको भी दावत देनी चाहिये।

यह सप्ताह राष्ट्रीय-सप्ताह कहलाता है। यह हमारे लिअे पारमार्थिक काम करनेका सप्ताह है। २९ साल पहलेका जिक्र है, जब आजके बहुतसे नौजवानोंका जन्म भी नहीं हुआ था, अिस सप्ताहने सारे हिन्दुस्तानमें प्राणका संचार कर दिया था। तबसे हर साल हम यह सप्ताह मनाते हैं।

अिस साल गांधी-स्मारक-कोशके लिअे पैसा अिकट्ठा करनेका काम अिस सप्ताहमें शुरू किया गया है। यह अच्छा है। जो लोग पैसा देंगे, वे कुछ त्याग-भावना सीखेंगे। लेकिन असली काम पैसेसे नहीं होगा। सेवाकार्यका पैसेके साथ कमसे कम सम्बन्ध है। पैसेसे सार्वजनिक काम बिगड़ भी सकता है। अुसका बहुत जाग्रत रहकर अुपयोग करना पड़ता है। सेवाके लिअे पैसेकी जरूरत नहीं होती। जरूरत है हमारा संकुचित जीवन छोड़नेकी, गरीबोंसे अेकरूप होनेकी।

अेक पुरानी कहानी है। याज्ञवल्क्य ऋषिकी दो पत्नियाँ थीं। अेक थी सामान्य, संसारमें आसक्ति रखनेवाली; और दूसरी थी विवेकशील, जिसका नाम था मैत्रेयी। याज्ञवल्क्यने सोचा कि अब घर छोड़कर आत्मचिन्तनके लिअे बाहर जाना चाहिये। जाते समय अुन्होंने दोनों पत्नियोंको बुलाया और कहा—"अब मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ। जानेसे पहले जो भी संपत्ति है, आप दोनोंमें बाँट दूँगा।" तब मैत्रेयीने पूछा—"क्या पैसेसे अमृत-जीवन प्राप्त हो सकता है?" याज्ञवल्क्यने जवाब दिया—"नहीं। 'अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन' धनसे अमृतत्वकी आशा करना बेकार है। अुससे तो वैसा जीवन बनेगा, जैसा श्रीमन्तोंका होता है। वह तो मृत-जीवन है। अगर अमृत-जीवनकी अिच्छा है, तो आत्माकी व्यापकताका अनुभव करो, सबकी सेवा करो, सबसे अेकरूप हो जाओ।"

कांग्रेसने दावा किया था कि वह गरीबोंका राज्य चाहती है। अगर हम गरीबोंका राज्य चाहते हैं, गरीबोंकी सेवा करना चाहते हैं, तो हमें गरीबोंकी मनोवृत्तिको समझना चाहिये। अुनसे अेक-रूप बनना चाहिये। वीरपूजा वीर बनकर ही हो सकती है। अिसलिअे अिस सप्ताहमें हम गरीब बननेकी कोशिश करें।

कलकी बात है। मैं कुरुक्षेत्र गया था। आप जानते हैं कि आजकल मैं शरणार्थियोंकी सेवामें घूम रहा हूँ। कल कुरुक्षेत्रकी बारी थी। पंडितजीके साथ गया था। कुरुक्षेत्र कअी पवित्र भावनाओंका स्मरण कराता है। गीताका स्मरण तो होता ही है। क्योंकि वहीं पर भगवान कृष्णने अर्जुनको गीताका सन्देश दिया था। अुसकी जगह भी वहाँ बताते हैं। मैं अुसे भी देखने गया था। मेरा दिल भर आया। अुस स्थानमें खास तो कुछ नहीं था। कुछ पेड़ थे और वही पंच-भूत, जो सारी दुनियामें भरे पड़े हैं। परमेश्वर भी वही जो सब जगह मौजूद है, अगर हम अुसे देखते हैं। लेकिन भावनाकी बात होती है, जिससे कहीं कुछ अनुभूति आती है। अुसी कुरुक्षेत्रमें आज गीताकी शिक्षासे अुलटी बात चल रही है। गीताने सिखाया कि बिना काम किये खानेका मनुष्यको कोअी अधिकार नहीं। कर्म ही मनुष्यके जीवनको पवित्र और अहिंसक बनाता है। लेकिन वहाँ तो महीनोंसे मुफ्त रेशन दिया जा रहा है। मैंने सोचा कि अगर अितने लोगोंको अेकाअेक काम देना मुश्किल जा रहा है, तो अुन्हें चक्कियाँ देनेपर कमसे कम वे अपना अनाज तो पीस ही सकते हैं। फिर तैयार आटा अुन्हें क्यों दिया जा रहा है? लेकिन यह सादी बात किसीको नहीं सूझी है। क्योंकि जो वहाँ काम कर रहे हैं, अुनके जीवनमें चक्की कहाँ है? मनुष्यको अपने जीवनके बाहर जाकर कल्पना करना मुश्किल होता है। अिसलिअे मैंने कहा कि गरीबोंकी सेवा करनेके लिअे गरीब बनना चाहिये। तुलसीदासजीने अपने भजनमें गाया है, "नाथ गरीब निवाज हैं, मैं गँहि न गरीबी"—हे नाथ! आप तो गरीबोंका पालन करनेवाले हैं। लेकिन मैंने गरीबीको अपनाया नहीं है। तो अीश्वरके पास मेरा पालन कैसे होगा?

अिसलिअे अिस राष्ट्रीय सप्ताहमें हमें गरीबीका व्रत ले लेना चाहिये। गरीबीका मतलब है शरीर-श्रमको अपनाना। शरीर-श्रमको टालनेसे ही दुनियामें साम्राज्यशाही और दूसरी अनेक शाहियाँ पैदा हुअी हैं। अिन सबका हमें विरोध करना हो, तो गरीबीका जीवन आरम्भ कर देना चाहिये। घरमें चक्की न हो, तो अुसे दाखिल कीजिये। गांधीजीने शरीर-श्रमके लिअे चरखा बताया, जिसे बच्चे, बूढ़े सब कोअी चला सकते हैं। वह गरीबोंसे तन्मय होनेकी निशानी है। लेकिन अगर हम चरखा चलाते हैं और बाकीका हमारा जीवन जैसेका तैसा रह जाता है, तो हमारा काम नहीं बनता है। हमें तो मजदूर बनना है, भंगी बनना है, गाँव गाँवमें जाकर सफाअीका काम करना है। अिस सप्ताहमें अैसा कुछ आरम्भ कर दीजिये। हमें तुलसीदासजीके जैसी व्याकुलता होनी चाहिये कि हम कब गरीब बनेंगे और कब अीश्वरके द्वारा हमारा पालन होगा?

हरिजनसेवक

२५ अप्रैल १९४८

चरखा-संघका पुनर्जन्म

चरखा-संघने अभी यह प्रस्ताव पास किया है :

"कांग्रेस-पंचायतके अुम्मीदवारोंके लिअे खादी पहनना लाजमी करके कांग्रेसने अेक भारी कदम अुठाया है, अैसा चरखा-संघ महसूस करता है । अिसलिअे सबको सहूलियतसे खादी मुहैया हो, अिस खयालसे खादीको प्रमाणित करनेकी शर्तोंमेंसे सूत-शर्तको चरखा-संघ अुठा लेता है । प्रमाणित करनेकी बाकीकी शर्तें, जो कि शुद्ध खादीके और मजदूरोंके हितमें हैं, रहेंगी । अितना करनेके अुपरान्त चरखा-संघ अपना पूरा ध्यान अिसके आगे वस्त्र-स्वावलम्बनके कामपर देगा । यानी अुत्पत्ति विक्रीका काम अुत्पत्ति विक्रीके लिअे वह नहीं करेगा । वस्त्र-स्वावलम्बी लोगोंको पूर्तिमें अगर कुछ खादी वह दे सका, तो कुछ समयके लिअे देनेकी कोशिश करेगा । चरखा-संघको अिस तरहसे अपनेको बदलनेमें जो समय लगेगा, अुस दरमियान चरखा-संघके द्वारा जो बिक्री होगी, वह अुसी तरह सूत-शर्तसे होगी, जैसी अभी हो रही है ।"

चरखा-संघका यह प्रस्ताव अुसके अितिहासमें अेक विशेष प्रस्ताव गिना जायगा । क्योंकि अुससे वह अुत्पत्ति बिक्रीके कामसे मुक्त हो कर अपना सारा ध्यान स्वावलम्बी खादीके प्रचारमें लगाना चाहता है । वही अुसका मूल अुद्देश्य था । लेकिन परिस्थितिवश अुसको अुत्पत्ति बिक्रीके काममें फँस जाना पड़ा । अुससे गरीबोंको राहत देनेका कुछ काम तो हुआ । खादीके लिअे कुछ भावना भी पैदा हुअी । लेकिन अुतनेसे अहिंसक समाजकी स्थापना नहीं हो सकती थी । अुसके लिअे प्रचलित प्रवाहके सामने खड़े होकर 'काते वह पहने, पहने वह काते' वाले मंत्रको बुलन्द करनेकी जरूरत थी । अुसी दिशामें अेक कदमके तौरपर सूत-शर्त लगाअी गअी थी । लेकिन तिसपर भी चरखा-संघका अुत्पत्ति बिक्रीका काम तो बना ही रहा । अब अिस प्रस्तावसे वह अुसमेंसे मुक्ति पा रहा है । मुक्त होते होते भी चन्द महीने तो लग जायँगे । लेकिन अुसकी कोअी भी चिन्ता नहीं है । प्रारब्ध-क्षयके लिअे कुछ समय तो लग ही जाता है ।

अब बेपारका काम स्थानिक लोगोंके हाथमें जायगा । अुसमें मुनाफाखोरी और मजदूरोंका शोषण न हो, अितना ही नियंत्रण चरखा-संघ रखेगा और प्रमाण-पत्र देगा । 'सूत-शर्त अुठाली गअी है, तो अितना भी नियंत्रण क्यों' अैसा न पूछा जाय । सूत-शर्त निकाली गअी है कांग्रेस-जनोंकी सहूलियतके लिअे । और नियंत्रण रखा गया है खादीकी अिज्जतकी रक्षाके लिअे । जिसमें मजदूरोंका शोषण हो, वह खादी ही नहीं है । कोअी कांग्रेसजन अुसे पसन्द नहीं कर सकता । अिसके अलावा खादीकी शुद्धि भी देखनी होगी । अुसके लिए चरखा-संघके प्रमाण-पत्रकी जरूरत है ।

अब कांग्रेसजनोंकी कसौटी है । कांग्रेस-पंचायतके अुम्मीदवार खद्दरपोश होने चाहियें, शराबी नहीं होने चाहियें — अित्यादि शर्तें कांग्रेसने रखी हैं । अिसका अर्थ तो मैं यह करूँगा कि कांग्रेसकी निगाहमें मिलका कपड़ा पहननेवाले और शराबी समान हैं । यानी जैसे शराबबन्दी कांग्रेसका प्रोग्राम है, वैसे ही मिलके कपड़ेका बहिष्कार कांग्रेसका प्रोग्राम है । अगर यह अर्थ ठीक है, तो कांग्रेसको चाहनेवाले हरअेक आदमीका फर्ज हो जाता है कि वह हर तरहसे खद्दरको बढ़ावा दे । यानी खुद कातने लगे और पूर्तिमें चरखा-संघकी प्रमाणित खादी पहने । समाजवादी आदि पुरोगामी पक्षोंका भी कर्तव्य हो जाता है कि अगर वे गरीबोंका हित चाहते हैं और चरखा-चक्रवाले झंडेको मानते हैं, तो वे भी खादीको अपनाकर पूँजीवादका सक्रिय विरोध करें ।

विनोबा

तीन गुत्थियाँ

[श्री विनोबाने सेवाग्राम-सम्मेलनमें १३-३-'४८ को जो भाषण दिया था, अुसका कुछ हिस्सा नीचे दिया जाता है । —सं०]

मैं पहली बात वह कहना चाहता हूँ, जिसका जिक्र सदर साहब (डॉ० राजेन्द्रप्रसाद) ने किया है । बार बार वह बात दिलमें आती है । अितना बड़ा देश अपनी आज़ादी पाते ही फौरन अितना गिर जाता है, जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी । अिस देशकी यह हालत क्यों हुअी? "आज दुनियाभरमें यह हुआ है और महायुद्धका यह नतीजा है," अितना कह देनेसे ही हमारा काम नहीं हो जाता । हमारा दावा तो यह है कि हमने अपनी आज़ादी अहिंसाके विशेष तरीकेसे हासिल की है, जैसे दूसरे देशोंने नहीं की । यद्यपि वह तरीका अख्तियार करनेका हमारा ढंग कमजोर था, फिर भी हम कामयाब हुअे । दुनिया भी हमारा यह दावा मंजूर करती है । लेकिन अैसा दावा करनेवाले लोग अेकाअेक गिर कैसे गये? अिसका कारण मैं ढूँढ रहा हूँ । लेकिन ठीक जवाब नहीं मिल रहा है । हम कारणोंको जानेंगे, तो अुनका अुपाय कर सकेंगे ।

दूसरी विचार करनेकी बात प्रान्तीय भावनाकी है । जितना संस्कृत साहित्य मैंने पढ़ा है, अुसमें देशप्रेमका जहाँ तहाँ जिक्र आया है । लेकिन अुसमें "दुर्लभं भारते जन्म" अैसा ही वचन आया है; बंगालमें या महाराष्ट्रमें या गुजरातमें जन्म लेना दुर्लभ है, अैसा वचन कहीं नहीं मिला । यह अुस समयकी बात है, जब आज जैसे रेल्वे, पोस्ट वगैरा ताल्लुकके साधन नहीं थे । अुस जमानेमें भी लोगोंने भारतको अेक माना और अुसमें जन्म लेनेमें अपना भाग्य समझा । अुसीको स्वतंत्र करनेके लिअे देशभरमें हमने आन्दोलन किया और सबने मिलकर अुसमें हिस्सा लिया । लेकिन अब स्वतंत्रता प्राप्त करने पर प्रान्तीय भेद अितने जोरोंपर क्यों है? अुसके बढ़ते ही जानेवाले दौरको कैसे रोका जाय? वह रोका न जा सका, तो आगे चलकर बड़ा खतरा पैदा हो सकता है; क्योंकि अुसमें पागलपनके वही अंश हैं, जो हिन्दू-मुस्लिम सवालमें हैं ।

अब तीसरी महत्त्वकी बात साधन-शुद्धिकी है । मैं सोचता हूँ कि क्या कभी यह मुमकिन हो सकता है कि हिन्दुस्तान भरमें अेक ही विचार या अेक ही आअिडियालॉजी चलेगी? अगर यह तय है कि अलग अलग विचार रहने ही वाले हैं, तो क्या यह जरूरी नहीं कि अैसे मुख्तलिफ विचार रखनेवालोंको अिस नतीजेपर आना ही चाहिये कि वे अपने विचारोंके प्रचारमें अशुद्ध या हिंसात्मक साधनोंका अुपयोग न करें? बापूने अपनी जिन्दगीभर हमें यही सिखाया कि "जैसे हमारे साधन होंगे, वैसे ही हमारे मकसद होंगे ।" यानी साधनोंका रंग मकसदपर चढ़ता है । अिसलिअे यह जरूरी होता है कि अच्छे मकसदके लिअे साधन भी अच्छे ही होने चाहियें । गांधीजीकी हत्याके पीछे अेक बड़ी जमात है, वह हत्याकी योजना बनाती है, हत्या होनेपर आनन्द मनानेकी तैयारियाँ करती है; और अुसके सारे आयोजनका हम लोगोंको पता तक नहीं लगता । अगर हम साधन-शुद्धिका विचार छोड़ दें, तो क्या अैसी जमात तारीफके काबिल नहीं गिनी जायगी? अगर अपना मकसद पूरा करनेके लिअे चाहे जैसे साधन मान्य समझे जायँ, तो फिर यह कौन तय करेगा कि किसका मकसद सही है और किसका गलत? हरअेकको अपना मकसद ठीक ही लगता है । लेकिन कितने ही अलग अलग मकसद क्यों न हों, अुनकी प्राप्तिके लिअे हिंसा और असत्यका अुपयोग तो करना ही नहीं चाहिये । अिस विषयमें सब मिलकर अेक मोर्चा बना सकेंगे, तो वह बड़ी चीज होगी । हमें नये सिरेसे योजना बनानी है, नअी व्यवस्था स्थापित करनी है, नअी रचना करनी है — वगैरा सवालोंको अिस समय जरा अेक तरफ रखकर हम पहले यही खयाल पक्का कर लें कि हमें भले साधनोंका ही अुपयोग करना है । जिनका अैसा निश्चय है, वे सब हमारे साथ ही हैं, अैसा हम समझें ।

खूनके दागवाले कपड़े

काठियावाड़के अेक खोजा गृहस्थने, जो बीस-बाअीस सालसे गांधीजीके साथ पत्र-व्यवहार करते थे और लगभग पिछले डेढ़ सालसे मेरे साथ भी कभी कभी पत्र-व्यवहार किया करते हैं, अेक लम्बा पत्र मुझे लिखा है। अुसमेंसे कुछ हिस्सा नीचे देता हूँ :

"क्या गांधीजीके खूनके दागवाले कपड़े, संग्रहालयके लिअे सँभालकर रखे जायँगे? हम क्या चीज़ सँभालकर रखना चाहते हैं — प्रेम या वैर?

"अन्धी भक्ति हमें भारी भुलावेमें डालनेवाली साबित होगी। क्या अिस तरह गांधीजीकी देह-पूजा करके अुनकी तपश्चर्या अुन्हींके बालकों — अनुयायियों — के हाथ निष्फल कर दी जायगी?

"हम बापूकी आत्म-पूजा चाहते हैं या देह-पूजा? व्यक्तिकी पूजा चाहते हैं या अच्छे गुणोंवाले व्यक्तित्वकी?

"हमें सत्य और अहिंसाके पुजारीकी पूजा करते समय और अुनके स्मारकोंका विचार करते समय बड़े विवेकसे काम लेना होगा। वर्ना हम धर्मके नामपर अधर्म, सत्यके नामपर असत्य, अहिंसाके नामपर हिंसा और न्यायके नामपर अन्यायका आचरण करके अर्थके नामपर अुलटे अनर्थ कर बैठेंगे।"

अिस पत्रके विचारोंके साथ मेरे विचार मिलते हैं। मुझे खुद तो बापूके द्वारा अिस्तेमाल की जानेकी वजहसे ही किसी चीजका संग्रह करने-करानेमें कोअी दिलचस्पी नहीं है। लेकिन मेरे-जैसे सभी लोग नीरस न होंगे, यह मैं समझ सकता हूँ। फिर भी मेरा यह मत है कि अगर ३० जनवरी १९४८ को देहत्यागके समय पहने हुअे बापूके कपड़े सँभालकर रखने ही हों, तो भी अुन्हें खूनके दागोंके साथ न रखा जाय। खूनके दाग धुलवाकर ही वे रखे जायँ। मैं आशा करता हूँ कि गांधी वस्तु संग्रह समिति अिसपर विचार करेगी।

मैंने अूपरकी टिप्पणी लिखकर समितिके मंत्री श्री काका साहबको दिखाअी। अुनकी अिच्छासे अुनके जवाबका जरूरी हिस्सा नीचे देता हूँ :

"मेरी वृत्ति दोनों तरफ झुकती है। वैरकी याद दिलानेवाली चीजें क्यों रखी जायँ? और फिर भी मुझे अैसा नहीं लगता कि खूनके दागवाले कपड़े देखकर मेरे मनमें गोडसेके लिअे गुस्सा या द्वेष पैदा होगा। मुझे लगता है कि पूज्य बापूजीके बलिदानका जैसाका तैसा स्मारक देखकर मेरे मनमें अुनके प्रति कृतज्ञताका भाव और दिलके डरको निकालकर अुनका अनुकरण करनेकी वृत्ति पैदा होगी।

"मैं यह जानता हूँ कि संस्कृतमें खूनके लिअे अेक शब्द 'अशुद्ध' है। खूनवाले कपड़े मैले ही कहे जायँगे। अपवित्र भी कहे जा सकते हैं। लेकिन खूनके सूखे हुअे दागवाले कपड़े संग्रहालयमें — स्मारकमन्दिरमें — रखनेके लिअे मेरे मनमें विरोध नहीं पैदा होता। मुझे लगता है कि आनेवाली पीढ़ियाँ अैसी चीजोंको देखकर धन्यता अनुभव करेंगी और थोड़ी अन्तर्मुख बनेंगी।

"साथ ही साथ यह भी लगता है कि अैसी दुनियावी चीजें देखकर ही अच्छी वृत्ति जगे और केवल कल्पनासे या शब्दोंमें बयान करनेसे न जगे, यह चीज़ अच्छी तो नहीं कही जायगी। औरतोंपर किये गये अत्याचारसे पैदा होनेवाले गुस्सेको पोसनेके लिअे रंगमंचपर वैसा अत्याचार कर दिखाना ठीक नहीं।

"फिर भी मैं अिस बातका कट्टर विरोधी नहीं हूँ कि किसी हद तक अच्छी भावनाअें जगानेके लिअे दुनियावी चीजोंका अिस्तेमाल किया जा सकता है।"

श्री काकासाहब साफ साफ यह कबूल करते हैं कि अिस बारेमें वे कोअी निश्चय नहीं कर सकते। मनमें जब अिस तरहकी दुविधा हो, तब निर्णय कैसे किया जाय?

वे कहते हैं कि मुझे नहीं लगता कि खूनके दागवाले कपड़े देखकर मेरे मनमें गोडसेके लिअे गुस्सा या वैर पैदा होगा। तो क्या अुनके मनमें, या दूसरे देखनेवालोंके मनमें गोडसेके लिअे प्रेम पैदा होगा? सम्भव है किसी समझदार आदमीके मनमें गोडसेके लिअे दया पैदा हो; लेकिन यह दूसरी बात है। यह बात अभी ताजी ही है कि गांधीजीके खूनके दागवाले कपड़े देखे बिना ही न सिर्फ गोडसेके खिलाफ बल्कि अुसकी जातिवालोंके खिलाफ भी लोगोंके मनमें कैसा द्वेष बढ़ा।

जब मनमें सच्चे रास्तेके बारेमें शक हो, तब जिससे अनर्थ होनेकी सम्भावना न हो, वही रास्ता लेनेका निर्णय किया जा सकता है। और वह रास्ता खूनके दागवाले कपड़ोंको सँभालकर न रखनेका ही है। वर्धा, १२–४–'४८

(गुजरातीसे) **किशोरलाल मशरूवाला**

कुरुक्षेत्रमें विनोबा

[८ अप्रैलको विनोबाजी पंडित नेहरूके साथ कुरुक्षेत्र छावनी देखने गये। दोपहरमें जो आम सभा हुअी, अुसमें विनोबाजीने नीचे लिखा भाषण दिया। — सं०]

मैं आप लोगोंके बीच शरणार्थियोंका हाल देखने और अुनकी सेवा करनेके लिअे आ गया हूँ। दिल्ली और पंजाबके कुछ कैम्प भी देख आया हूँ। आज पंडितजीके साथ यहाँ आना हुआ। अुनके साथ बहुत कुछ देखा। लेकिन अुतनेसे सन्तोष नहीं हो सकता था। अिसलिअे भोजनके बाद फिर तम्बुओंमें गया और लोगोंके साथ बात की।

आप लोगोंको मैं अैसे देख रहा हूँ, जैसे भक्त भगवानको देखता है। कुरुक्षेत्र पुण्यभूमि है। प्राचीन कालसे यह जगतमें मशहूर है। अिसी जगह भगवान कृष्णने अर्जुनको गीताका सन्देश दिया, जिसमें जीवनके लिअे कअी अुपयोगी बातें बताअी हैं। अुनमें अेक बात यह कही है कि जो मनुष्य काम किये बिना खाता है, वह पाप खाता है। अिसलिअे जिस किसीको खाना है, अुसे कुछ न कुछ काम भी करते रहना चाहिये। यहाँ कअी महीनोंसे मुफ्त रेशन दिया जा रहा है। शुरूमें शायद दूसरा कोअी अिलाज भी नहीं था। लेकिन आगे भी यही सिलसिला जारी रहा, तो अुसमें भला नहीं है। न खानेवालेका भला है, न देनेवालेका।

आप लोगोंको तैयार आटा मिलता है। लेकिन आटेके बदले आप अनाज लें और अुसे खुद पीस लें, तो आपको ताजा आटा मिलेगा, कुछ काम भी हो जायगा और सरकारका अुतना खर्च भी कम हो जायगा। आटा खराब मिलनेकी शिकायत भी मिट जायगी। अिस विषयमें सब डॉक्टर अेक राय हैं कि देहके लिअे हाथका पीसा हुआ ताजा आटा बहुत ज्यादा मुफीद है। अभी मैं गुड़गाँवके कैम्पमें गया था। वहाँ अेक-दो औरतें पीस रही थीं। मैं देखकर खुश हो गया। वहाँ जो सभा हुअी, अुसमें तो औरतोंकी ओरसे सौ चक्कियोंकी माँग की गअी। आपके यहाँ भी चक्की पीसनेका काम शुरू होना चाहिये। मैंने यहाँका अुद्योग-विभाग देखा। वह अच्छा काम कर रहा है। अुसमें कोल्हू भी चलता है। लेकिन अेक कोल्हूसे क्या होगा? फी आदमी अेक तोला तेल भी मान लें, तो अेक कोल्हू बहुत हुआ तो दो हजार लोगोंको तेल दे सकेगा। यहाँकी आबादी तो दो लाखकी है। अुसके लिअे सौ कोल्हू चलने चाहियें। अभी जो कोल्हू चलता है, वह तो प्रदर्शनकी चीज है।

मैं तम्बुओंमें जब लोगोंसे बात कर रहा था, तब वे अपने फटे कपड़े मुझे दिखा रहे थे। मैंने पूछा, क्या आप कातनेको तैयार हैं? कातेंगे तो खुद कपड़े बनवा सकेंगे।

अिसी तरह और भी रोजमर्राके जीवनकी जितनी चीजें हैं, वे आप खुद करने लग जायँ, तो सरकारका बोझ हलका हो जायगा। अिस तरहका बोझ देश अधिक समय तक सहन नहीं कर सकेगा। अिसलिअे आप लोग जो भी काम मिले अुसे करनेको तैयार रहें।

अनाप-शनाप कीमतें

मेरे पास खासकर गुजरातसे शिकायतें आ रही हैं कि वहाँ आम तौरपर व्यापारी और कुछ हद तक किसान भी कण्ट्रोल हट जानेके बाद अीमानदारीसे अपना फर्ज अदा नहीं करते । अुन्होंने अनाप-शनाप कीमतें बढ़ा दी हैं । अिसका नतीजा यह हुआ है कि मध्यम और निचले वर्गके लोगोंके लिअे अनाज और दूसरी खानेकी चीजें पाना बहुत कठिन हो गया है । रेशनिंगके हट जानेसे अब अुन्हें वह थोड़ासा अनाज भी नहीं मिल पाता, जो वे कण्ट्रोलमें पा सकते थे । बहुत पुराने जमानेसे महाजन (यानी, व्यापारियों और किसानोंका संघ) का यह देखनेका फर्ज माना गया है कि हरअेक नागरिकको अुचित कीमत पर खुराक मिल जाय । अेक जमानेमें महाजन सचमुच किसी गाँव या शहरकी जनप्रिय सरकार थे, क्योंकि वे अीमानदारीसे अपना यह फर्ज अदा करते थे । जब अुन्होंने अपने अिस फर्जकी अुपेक्षा की, तो वे कमजोर हो गये और आखिरकार राजने अुन्हें दबा दिया । अगर वे फिरसे अपना पुराना गौरव और महत्त्व पाना चाहते हैं, तो अुन्हें आम लोगोंके भलेका ध्यान रखनेके महत्त्वको समझना चाहिये ।

मिट्टीका तेल बाँटनेके लिअे जो अेजण्ट रखे गये हैं, अुनके बारेमें भी शिकायतें आती हैं । मालूम होता है कि मिट्टीके तेलका बाजार कुछ अेजण्टोंका अिजारा बन गया है । नतीजा यह है कि अुसकी बिक्रीमें काफी काला बाजार चल रहा है । मैं आशा करता हूँ कि अिससे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकारी और संस्थाअें अिस पर ध्यान देंगी और गलतीको सुधारेंगी ।

वर्धा, १२-४-'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**

(अंग्रेजीसे)

कांग्रेस और हिन्दुस्तानी

देशके लिअे, आज़ादीकी अनेक लड़ाअियाँ लड़कर, आज़ादी हासिल करनेके बाद अब कांग्रेस अपना कलेवर बदलने जा रही है । अैसे मौकेपर यह ध्यान रहे कि कहीं अुसकी आत्मा न बदल जाय । और यह भी देखना होगा कि नया कलेवर कांग्रेसकी आत्माकी शान बढ़ानेवाला हो ।

आज तक कांग्रेसकी ओर सब लोग खिंचे हैं, अिसका कारण अुसका राष्ट्रीयताका स्वरूप है । वह स्वरूप आज तक कांग्रेसने कायम रखा है । आज जो फिरकेवाराना जहरकी हवा जोरसे बह रही है, अुससे कांग्रेस ही अेक अैसी संस्था है जो टक्कर ले रही है । यह तो दावेसे नहीं कहा जा सकता कि हरअेक कांग्रेसी फिरकेवाराना जहरसे बिलकुल परे है । लेकिन कांग्रेसका मकसद यही रहा है कि वह सबकी बनी रहे, किसी अेक गिरोह या पंथकी नहीं । अिसलिअे कांग्रेसको नयी पोशाक पहनानेका काम जिनके जिम्मे है, वे अुस पोशाकमें फिरकेवाराना जहरका धब्बा न लगने देंगे, अैसी अुम्मीद की जाती है ।

कांग्रेसको करोड़ों लोग — पढ़ेलिखे या अनपढ़ — तबसे पहचानने लगे, जबसे पूज्य गांधीजीने आजसे करीब तीस बरस पहले अुसमें प्रवेश किया । लोग गांधीजीके जरिये ही कांग्रेसको समझने लगे, अैसा कहनेमें अतिशयोक्ति न होगी । अिसकी वजह क्या है ? अेक वजह यह है कि गांधीजीने कांग्रेसका सन्देश लोगोंकी भाषामें पहुँचाया । जब तक कांग्रेसका कारोबार सिर्फ अंग्रेजीमें चलता रहा और कांग्रेसी नेता अंग्रेजीमें ही तकरीरें करते रहे, तब तक कांग्रेसका दायरा कुछ शहरों तक ही सीमित (महदूद) रहा । गांधीजीने जब कांग्रेसमें प्रवेश किया, तब वह हिन्दुस्तानके कोने कोनेमें फैल गअी । आज अगर कांग्रेस और अुसकी कमेटियोंके जलसोंमें हजारों लोग हिस्सा लेते हैं, दिलचस्पी लेते हैं — और अिसमें बहनोंकी संख्या कम नहीं होती — तो अुसका कारण यही है कि जलसोंकी कारवाअी हिन्दुस्तानीमें होती है । आज जब रेडियोपर यह खबर कही जाती है कि रातको साढ़े आठ बजे हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू बोलेंगे, तो लोग रेडियोके आसपास अिकट्ठे हो जाते हैं । अगर पंडितजी अंग्रेजीमें बोलना शुरू कर देते हैं, तो सुननेवालोंमेंसे बहुतसे निराश हो जाते हैं । लेकिन रेडियोपर अगर यह कहा जाता है कि प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू हिन्दुस्तानीमें बोलेंगे, तो बच्चेसे बूढ़े तक और बहनें भी सब राजी हो जाती हैं और रेडियोके पास ही अेक छोटी-सी सभा बन जाती है । यह सबके अनुभवकी बात है ।

कांग्रेसने बरसों पहलेसे ठहराया है कि वह अपने कामोंमें हिन्दुस्तानी जबानका अिस्तेमाल करेगी । और अुसकी बहुतेरी कार्रवाअियाँ हिन्दुस्तानीमें होती भी हैं । लेकिन हिन्दुस्तानीके व्यवहारमें अुसे जिस मंजिल तक पहुँचना है, अुससे वह आज भी काफी दूर है । और अचरजकी बात यह है कि जब हमने आज़ादी हासिल नहीं की थी, तब अंग्रेजी राज और अंग्रेजीके खिलाफ़ हमने जोरशोरसे आन्दोलन किया । मगर आज अंग्रेजी राज हट जानेपर और हमारा राज होनेपर भी कांग्रेसकी नुमाअिन्दगी करनेवाले हमारे कुछ भाअी अंग्रेजीके राजको हटानेमें हिचकिचाते हैं । अितना ही नहीं, अुसकी तरफदारी करते हैं । आम तौरपर यह कहा जा सकता है कि कांग्रेसके नुमाअिन्दे कांग्रेसकी, यानी जनताकी ताकत या दुर्बलता जाहिर करते हैं । लेकिन अिस बारेमें क्या यह साफ साफ कहना ठीक न होगा कि वे जनताकी नहीं बल्कि खुदकी दुर्बलता जाहिर करते हैं ? जनताकी भाषा अंग्रेजी नहीं है, फिर वह क्योंकर अुसका राज कबूल करेगी ?

अिसलिअे अगर कांग्रेस जनताकी है और जनता कांग्रेसकी, तो होना यह चाहिये कि कांग्रेस अपनी तमाम कार्रवाअी हिन्दुस्तानीमें ही करनेका आग्रह रखे ।

अिधर जबसे हमारे देशके दो टुकड़े — अिण्डियन यूनियन और पाकिस्तान — हो गये हैं, तबसे अेक और हवा चली है कि हमारे देशकी जबान नागरी लिपिवाली हिन्दी ही होनी चाहिये । पूज्य गांधीजी कहा करते थे कि अुनके मनमें काश्मीरसे कन्याकुमारी तकका सारा देश अेक ही है और वे समूचे भारतकी सेवा करना चाहते हैं । मेरी नम्र रायमें हरअेक कांग्रेसीकी यही भावना होनी चाहिये । और समूचे हिन्दको, या दोनों टुकड़ोंको खयालमें रखकर भी कांग्रेसकी आज जो हैसियत है, अुसे देखते हुअे कांग्रेसके कामकाजकी जबान हिन्दुस्तानी ही हो सकती है, अगर अुसे अपनी राष्ट्रीयताकी हैसियत और सब कौमोंकी, सब मजहबोंकी और सब प्रान्तोंकी नुमाअिन्दगी करनेवाली संस्थाकी हैसियत कायम रखनी है । कांग्रेसकी जबान या देशकी राष्ट्रभाषा न अकेली हिन्दी हो सकती है, न अकेली अुर्दू । वह तो हिन्दुस्तानी ही हो सकती है, जो आसान हिन्दी और आसान अुर्दूका मिलाजुला रूप है और जिसे अुत्तर हिन्दुस्तानके शहरों और गाँवोंके हिन्दू, मुसलमान वगैरा बोलते हैं, समझते हैं, और आपसके कारोबारमें काममें लाते हैं, और आज जो नागरी और अुर्दू दोनों लिखावटोंमें लिखी-पढ़ी जाती है । कांग्रेसमें कुछ तो हिन्दीके प्रेमी होंगे और कुछ अुर्दूके । अुन्हें अेक-दूसरेका द्वेष न करना चाहिये, बल्कि अेक दूसरेके नजदीक आना चाहिये ।

आज तक कांग्रेसकी रहबरी पूज्य गांधीजीने की और कांग्रेसने देशकी । अब गांधीजीके बाद रहबरीका काम अुन कांग्रेसी नेताओंको करना होगा, जिनकी दृष्टि विशाल और दूर तक देखनेवाली हो, जिनका दिल अुदार हो, जो राष्ट्रीय भावनाके हों ।

पिछले मार्च महीनेमें, गांधीजीके सिद्धान्तोंको माननेवाले और रचनात्मक काम करनेवाले लोग सेवाग्राममें अिकट्ठे हुअे थे । अुन्होंने "सर्वोदय समाज" की स्थापना की । अिस समाजका अुद्देश्य सत्य और अहिंसाकी बुनियादपर समाजकी रचना करना है । अिसके लिअे जो बाअीस साधन काममें लाये जायँगे, अुनमें "हिन्दुस्तानीका राष्ट्रभाषाके तौरपर प्रचार करना" भी है ।

अिस तरह गांधीजीके सिद्धान्तोंमें विश्वास करनेवालों और अुनकी दिखाअी हुअी राहपर चलनेकी कोशिश करनेवालोंने देशकी और

कांग्रेसकी रहबरी की है। कांग्रेसी नेता लोग आजकल यही कह रहे हैं कि गांधीजीके दिखाये हुअे मार्गपर चलनेमें ही देशका कल्याण है।

ीश्वर सबको सन्मति दें!

वर्धा, ११–४–'४८ **अमृतलाल नाणावटी**

गांधी स्मृतिवस्तु संग्रह समिति

(१)

सेवाग्राममें रचनात्मक कार्यकर्ताओंके सम्मेलनके सम्बन्धमें जो लोग अिकट्ठे हुअे थे, अुनमेंसे कुछ कार्यकर्ता मंगलवार ता० १६ मार्चको डॉ० राजेन्द्रप्रसादकी सदारतमें मिले। अुन्होंने यह निर्णय किया कि 'महात्मा गांधी स्मृतिवस्तु संग्रह समिति' नामकी अेक छोटीसी समिति बनाअी जाय, जो महात्मा गांधीसे सम्बन्ध रखनेवाली जगहों, संस्थाओं और चीजोंके बारेमें जानकारी अिकट्ठी करे और अैसी विशेष दिलचस्पीकी मिल सकने और हटाअी जा सकनेवाली चीजें अेक जगह अिकट्ठी करे। अिसमें कल्पना यह है कि अैतिहासिक महत्वकी अैसी सारी चीजें अिकट्ठी की जायँ और अुनकी रक्षाका अस्थायी प्रबन्ध किया जाय। जब गांधी राष्ट्रीय स्मारक-समिति अपने ट्रस्टी कायम करेगी और वस्तुओंको सँभालनेका काम अपने हाथमें लेने लायक हो जायगी, तो वह गांधी स्मृतिवस्तु संग्रह समितिका काम सँभाल लेगी। अिस बीच अैसी कुछ चीजोंके खो जाने या बिगड़ जानेका खतरा है। अिसलिअे अुन्हें खोने या बिगड़नेसे बचानेके लिअे तुरत कोअी कदम अुठाना जरूरी है। अिसके लिअे अेक समिति बनाअी गअी, जिसके सभापति बाबू राजेन्द्रप्रसाद, मंत्री श्री काकासाहब कालेलकर और सदस्य श्री देवदास गांधी, श्री प्यारेलाल और श्री कमलनयन बजाज चुने गये। अिन्हें समितिके लिअे नये सदस्य चुननेका अधिकार दिया गया है।

जिन व्यक्तियों, संस्थाओं या मंडलोंको अैसी जगहों या चीजोंकी जानकारी हो, या जिनके पास ये चीजें हों, अुन सबसे यह समिति अपील करती है कि वे समितिके मंत्री या किसी सदस्यको अिसकी सूचना दें, ताकि समिति अुन्हें पाने, अिकट्ठा करने और सँभालकर रखनेके लिअे जरूरी कदम अुठा सके। यह आशा की जाती है कि अखबारवाले समितिकी मदद करेंगे और सारे व्यक्ति और संस्थाअें अिस अपीलपर जरूरी ध्यान देंगी।

अिसमें यह सुझाव नहीं है कि जिन लोगोंके पास यादगारकी चीजें होंगी, अुन्हें लाजमी तौरपर या हर हालतमें अुनसे अलग होनेके लिअे कहा जायगा। लेकिन लोगोंके पास अैसी अैतिहासिक महत्वकी चीजें हो सकती हैं, जिन्हें किसी संस्थाको सौंप देना ही ठीक होगा। बेशक, जिन लोगोंके पास अैसी चीजें होंगी, वे खुशीसे समितिके काममें सहयोग देंगे। अिसलिअे अभी तो समिति विशेष महत्वकी चीजें रखनेवाले सब लोगोंसे यह अपील करती है कि वे रेकार्डमें रखनेके लिअे और चीजोंको सँभालकर रखनेके बारेमें समितिके विचारके लिअे मंत्रीको पूरी पूरी जानकारी दें।

समिति जिन जगहों और चीजोंके बारेमें जानकारी चाहती है या जिन्हें हासिल करना चाहती है, वे ये हैं: (१) सारी दिलचस्पीकी जगहें, जिनका सम्बन्ध गांधीजीके जीवनकी महत्वपूर्ण घटनाओं और महत्वपूर्ण मंजिलोंसे हो; (२) निजी अुपयोगकी चीजें, जो किसी भी समय गांधीजीके काममें आअी हों; (३) यादगारका काम देनेवाली सारी चीजें। अुदाहरणके लिअे, गांधीजीको कअी चीजें भेंट की गअी थीं, जिन्हें वे अपने पास न रखते और लोगोंको बेच देते थे। और अिस तरह जो पैसा आता, अुसे वे अपने सार्वजनिक कामों और रचनात्मक कामोंमें खर्च करते थे। संभव है कि बहुतसे लोगोंने अैसी चीजोंको संभाल कर रखा हो।

समितिका यह भी अिरादा है कि गांधी राष्ट्रीय-स्मारककी योजनाके अेक अंगके नाते गांधीजीके हस्तलेखों, छपे हुअे लेखों, निजी पत्रव्यवहार और प्रकाशित व अप्रकाशित लेखोंके संग्रह, सँभाल और सम्पादन के लिअे और जो योग्य मालूम हों अुनके प्रकाशनके लिअे पूरा अिन्तजाम किया जाय। अुनमेंसे कुछ तो दूर दूरकी जगहोंमें फैले हुअे होंगे। समय पर अुनके संग्रहके लिअे माँग की जायगी। अिस बीच कीमती साहित्यके बिगड़ने या खो जानेका खतरा है। अिसलिअे जिन लोगोंके पास अैसी चीजें या अुनकी जानकारी है, अुन सबसे समिति अपील करती है कि वे अिस बारेमें समितिके मंत्रीसे पत्रव्यवहार करें।

समितिने गांधीजीके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली वर्धा, सेवाग्राम और साबरमतीकी सारी अिमारतोंके फोटू, नकशे और नमूने होशियार कलाकारोंसे तैयार करानेका जिम्मा भी लिया है, ताकि अुन्हें कुदरती हालतमें सुरक्षित रखा जा सके।

सारा पत्रव्यवहार मंत्री, काकासाहब कालेलकर, काकावाड़ी, वर्धाके पतेसे किया जाय।

बजाजवाड़ी, वर्धा, १७–३–'४८ **काका कालेलकर**

(२)

श्री काका साहब कालेलकरने अिसी विषयपर नीचेका दूसरा बयान निकाला है:

> सेवाग्राम-सम्मेलनके बाद तुरत ही यह अपील निकाली गअी कि महात्मा गांधीके जीवन और कामोंसे सम्बन्ध रखनेवाली जगहों, संस्थाओं और यादगारकी चीजोंकी जरूरी सूचना गांधी स्मृतिवस्तु संग्रह समितिके मंत्रीको दी जाय, ताकि अुन्हें सुरक्षित रखनेका अिन्तजाम किया जाय।
>
> चूँकि कुछ लोगोंने हमारे पास गांधीजीके बारेमें अखबारोंमें छपे लेख, निबन्ध, कविताअें वगैरा भेजी हैं, अिसलिअे हम जल्दी ही यह बात साफ कर देना चाहते हैं कि हमारी समितिका अैसी सामग्री अिकट्ठी करनेका अिरादा नहीं है।
>
> अगर महत्वपूर्ण चीजें हमें दी गअीं, तो अुन्हें आखिरकार राष्ट्रीय गांधी संग्रहालयमें रख दिया जायगा।
>
> सारी दुनियासे पत्र लिखनेवाले लोगोंको गांधीजीने जो जवाब दिये हैं, अुन्हें भी सँभालकर रखना होगा। गांधीजीके पत्रोंके संग्रह, सँभाल, सम्पादन और प्रकाशनका काम बहुत भारी है। यह भारी जिम्मेदारी नवजीवन ट्रस्टको लेनी होगी।
>
> अिस समितिका खास मकसद यादगारकी चीजों और पत्रोंकी जगह वगैराके बारेमें पूरी जानकारी अिकट्ठी करनेका है। वह अिन चीजोंको लापरवाही, नुकसान या बिगाड़से बचानेके खातिर अिकट्ठी करने और सँभालकर रखनेके लिअे भी तैयार है। अभी तो यही ठीक होगा कि जिन लोगोंके पास गांधीजीके लिखे पत्र हों, वे सबसे पहले हमें अुनकी नकल भेजें और किनके नाम व किन हालतोंमें वे लिखे गये थे, यह जरूरी तफसील भी लिखें। वे अपनी नकलमें पत्रके अुस हिस्सेको निशान लगाकर दिखा दें, जिसे वे पत्रोंके प्रकाशनका मौका आने पर छपवाना ठीक न समझें। समय आनेपर मूल पत्रोंकी माँग की जायगी, क्योंकि जब तक किसी नकलको मूल पत्रके साथ सावधानीसे मिला नहीं लिया जाता, तब तक अुसे प्रमाणित नहीं माना जा सकता। जिनके पास गांधीजीके पत्र वगैरा हैं, अुन्हें यह सलाह दी जाती है कि वे माँग करनेसे पहले मूल चीज हमारे पास न भेजें। अगर वे अुन्हें सलामतीसे सँभाल न सकनेके कारण हमारे पास भेज दें, तो दूसरी बात है। अैसे सब पत्रों, यादगारकी चीजों, संस्थाओं और जगहोंकी सूचना जहाँ तक संभव हो छोटी और निश्चित होनी चाहिये।
>
> पत्र लिखनेवाले सज्जन मेहरबानीसे अपना पूरा नाम और पता काका साहब कालेलकर, काकावाड़ी, वर्धाको लिख भेजें।

१०–४–'४८

(अंग्रेजीसे)

ब्राह्मण-हरिजन विवाह

१३ मार्च, १९४८ के दिन सेवाग्राम आश्रममें पूज्य ठक्कर बापा और देशके अनेक नेताओंके आशीर्वादके साथ श्रीमती गोपराजु मनोरमाका श्री रावुरि अर्जुनरावसे जो विवाह हुआ, उसका जिक्र इसके पहले ही 'हरिजनसेवक' में आ जाना चाहिये था। लेकिन खेद है कि मैं असा न कर सका।

श्रीमती मनोरमा कृष्णा जिले (आन्ध्र) के प्रो० गोपराजु रामचन्द्र रावकी सबसे बड़ी लड़की हैं। आज तक चली आयी जात-पाँतकी नज़रसे वह ब्राह्मण कहलाती हैं। और उसी नज़रसे श्री अर्जुनराव कृष्णा जिलेके अेक हरिजन हैं। श्री रामचन्द्रराव अेक पुराने हरिजन-सेवक हैं और लोकसेवामें अपना जीवन बिता रहे हैं। श्री अर्जुनराव बहुत कुछ उनकी देखभालमें ही पले हैं।

सन् १९४५ या ४६में सेवाग्राममें हरिजनसेवकोंका अेक छोटा-सा जलसा हुआ था। उसमें गांधीजीने यह राय जाहिर की थी कि जो अपनी लड़कीका ब्याह अेक हरिजनके साथ करानेको तैयार हो, उसीको मैं पूरा हरिजनसेवक मानूँगा। इसके चन्द दिनों बाद गांधीजीका मद्रासकी तरफ जाना हुआ। प्रो० रामचन्द्रराव उन्हें वहाँ मिले और अपनी लड़कीकी शादी श्री अर्जुनरावके साथ करनेकी ख्वाहिश पेश की। गांधीजी इस विचारसे खुश हुअे। लेकिन उन्होंने सुझाया कि अभी दोनोंकी उम्र कुछ छोटी है। इसलिये विवाहके लिये दो-अेक साल ठहर जाना ठीक होगा। तब तक अर्जुनराव सेवाग्राम-आश्रममें रहकर तालीम पायें, और मनोरमा बहन किसी कस्तूरबा-तालीमी-केन्द्रमें शिक्षा लें। प्रोफेसर साहबने गांधीजीकी बात मान ली और अर्जुनरावको उन्हें सौंप दिया। तबसे अर्जुनराव आश्रममें रहे। उन्होंने ८ महीने सेवाग्राममें सफाईका काम किया, ६ महीने श्री काका साहबके पास हिन्दी पढ़ी, ८ माह तक श्री अनन्तरामजीके पास उर्दू पढ़ी, ९ माह तक आश्रमका रसोड़ा चलाया, और पाखाना सफाई, कताई, धुनाई वगैरा करके आश्रम-विद्यापीठकी समाजविद्यामें विशारद हुअे। गांधीजीको उनकी प्रगति और स्वभाव वगैरासे सन्तोष हुआ। श्रीमती मनोरमाने उसी दरमियान कस्तूरबा-तालीमी-केन्द्रमें प्रसूति कामकी तालीम ली।

आन्ध्रमें प्रो० रामचन्द्ररावकी इस तजवीजका काफ़ी विरोध हुआ। कुछ लोगोंने धमकियाँ दीं। तो कुछने यह देखकर कि सगाई जाहिर होनेपर भी दो साल तक विवाह नहीं हो रहा है मान लिया कि यह सारा ढोंग है, कुछ होना-जाना नहीं है। और उनकी बुराई करने लगे। लेकिन प्रो० रामचन्द्रराव दिलके पक्के थे। वे पिछले अक्तूबरमें पूज्य बापूजीसे मिले और शादीके विषयमें चर्चा की। विवाह-विधिके बारेमें भी बात की।

प्रो० रामचन्द्रराव खुदको 'अनीश्वरवादी' बतलाते हैं। वे 'ईश्वर' को साक्षी रखकर विवाह-विधि नहीं कराना चाहते थे। पूज्य बापूजीने रास्ता निकाला कि जहाँ जहाँ ईश्वरका जिक्र हो, वहाँ सत्य शब्द बरता जाय। प्रोफेसरने 'सप्तपद' की सफाई भी माँगी। पूज्य बापूजीने कहा कि सप्तपदसे सब तरहका रचनात्मक कार्यक्रम ही समझा जाय। इस तरह विधिके विषयमें समाधान कर लिया गया।

इस विषयमें श्री प्रभाकरजीने, जो सेवाग्राम-आश्रमके पुराने आन्ध्रवासी हरिजन कार्यकर्ता हैं और जिनके मातहत श्री अर्जुनराव आश्रममें शिक्षा पाते थे, पूज्य गांधीजीके साथ कुछ पत्रव्यवहार किया था। पिछले नवम्बरमें उन्हें पूज्य गांधीजीसे नीचे लिखी चिट्ठियाँ मिली थीं:

(१)

नअी दिल्ली, २९-१०-'४७

चि० प्रभाकर

अर्जुनरावकी शादी अप्रैल मासमें भले रखो। मैं कहाँ हूँगा, सो तो ईश्वर ही जानता है। अगर मेरे सान्निध्यमें ही करनी है, तो जिधर मैं हूँगा, वहीं हो सकती है। सेवाग्राम आनेकी संभावना बहुत कम है। आजका जहर हमें कहाँ ले जायगा, उसपर सब निर्भर है।

बापूका आशीर्वाद

(२)

नअी दिल्ली, २५-११-'४७

अप्रैल मास तो मेरी नजरसे बहुत दूर है। जब नजदीक आयेगा, तब कह दूँगा कि साथमें किसको आना चाहिये। मेरा खयाल है कि तुम्हें तो आना होगा।

बापूका आशीर्वाद

ये इस विवाहके पीछे रही हुई बातें हैं।

मराठीमें कहावत है कि "बोले तैसा चाले, त्याची वंदावीं पाउलें" (बोले वैसा चले, वाके पैरोंकी रज ले)। प्रो० गोपराजु रामचन्द्रराव, उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती मनोरमा और प्रो० रामचन्द्ररावके परिवारने इसका बहुत बड़ा उदाहरण समाजके सामने पेश किया है। इसके लिये उनका जितना अभिनन्दन करें कम है। हम उम्मीद करें कि जल्द ही वह वक्त आयेगा, जब असे विवाह रोज-ब-रोजके किस्से हो जायँगे और उनकी तरफ ध्यान देनेकी जरूरत न रहेगी। लेकिन यह विवाह सिर्फ अपवाद रूप होनेकी वजहसे नहीं, बल्कि प्रो० रामचन्द्ररावकी धर्मबुद्धिके कारण और गांधीजीके सम्बन्धके कारण भी ध्यान देने लायक है।

वर्धा, १४-४-'४८

किशोरलाल मशरूवाला

हिन्दी मराठी शीघ्रलिपि वर्ग

गोविन्दराम सेकसरिया कामर्स कॉलेज, वर्धाकी ओरसे हिन्दी तथा मराठी शीघ्रलिपिके वर्ग १२ जुलाई, १९४८ से शुरू होंगे। पत्रलेखनके लिये ६ महीने तथा रिपोर्टिंगके लिये १० महीनेका पाठ्यक्रम रहेगा। शीघ्रलिपिके साथ नागरी मुद्रालेखन (टाइपिंग) भी विद्यार्थियोंको सिखाया जायगा। उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये जायँगे। विद्यार्थी अपनी उम्र तथा शिक्षा सम्बन्धी प्रमाण-पत्रोंके साथ आवेदन-पत्र ३१ मई, १९४८ तक भेज दें।

पत्रलेखनका शुल्क रु. ६० तथा रिपोर्टिंगका रु. १०० होगा। पत्रलेखनमें उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको ही रिपोर्टिंगके वर्गमें स्थान मिल सकेगा। विद्यार्थियोंको अपने रहने और खानेकी व्यवस्था खुद करनी होगी। कॉलेजके छात्रालयमें जो थोड़े स्थान हैं, वे रु. २५ भेजकर पहले निश्चित करनेवालोंको ही दिये जायँगे।

हिन्दी तथा मराठी शीघ्रलेखकोंकी सरकारी महकमोंमें तथा पत्रकारोंको काफी संख्यामें आवश्यकता है। इसलिये आशा है कि विद्यार्थी बड़ी संख्यामें आकर इस वर्गका लाभ उठायेंगे। छपे हुअे आवेदन-पत्र आचार्य, कामर्स कॉलेज, वर्धासे मिल सकेंगे।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल

विषय-सूची

			पृष्ठ
ओछी प्रान्तीयता	...	किशोरलाल मशरूवाला	७७
राजघाटपर श्री विनोबाका भाषण — ३	...		७९
चरखा-संघका पुनर्जन्म	...	विनोबा	८०
तीन गुत्थियाँ	...	विनोबा	८०
खूनके दागवाले कपड़े	...	किशोरलाल मशरूवाला	८१
कुरुक्षेत्रमें विनोबा	...		८१
अनाप-शनाप कीमतें	...	किशोरलाल मशरूवाला	८२
कांग्रेस और हिन्दुस्तानी	...	अमृतलाल नाणावटी	८२
गांधी स्मृतिवस्तु संग्रह समिति	...	काका कालेलकर	८३
ब्राह्मण-हरिजन विवाह	...	किशोरलाल मशरूवाला	८४
टिप्पणियाँ :			
सतकी शर्तें	...	कि० मशरूवाला	७८
'हरिजन' संस्करण	...	कि० मशरूवाला	७८
महिलाश्रम, वर्धा	...	कि० मशरूवाला	७९
हिन्दी मराठी शीघ्रलिपि वर्ग	...	श्रीमन्नारायण अग्रवाल	८४